आत्मार्थी छात्रों के लिए अपूर्व अवसर

आत्मार्थी छात्र डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के सान्निध्य में रहकर चारों अनुयोगों के माध्यम से जैनधर्म का सैद्धान्तिक अध्ययन कर सकें तथा साथ ही संस्कृत, न्याय, व्याकरण आदि विषयों का आवश्यक ज्ञान प्राप्त करें ह्न इस महत्त्वपूर्ण उद्देश्य से जयपुर में विभिन्न ट्रस्टों के सहयोग से श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय चल रहा हैं, जिसमें पूरे देश के विभिन्न भागों से आये छात्र अध्ययन कर रहे हैं।

अबतक 573 छात्र शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करके शासकीय एवं अर्द्धशासकीय सेवाओं में रहकर विभिन्न स्थानों में तत्त्वप्रचार की गतिविधियाँ संचालित कर रहे हैं, जिनमें से 59 छात्र जैनदर्शनाचार्य की स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं। अनेक छात्र पी.एच.डी./नेट/जे.आर.एफ. आदि भी कर चुके हैं।

ज्ञातव्य है कि यहाँ प्रवेश पानेवाले छात्रों को राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) की जैनदर्शन (त्रिवर्षीय शास्त्री स्नातक) कोर्स की परीक्षायें दिलाई जाती हैं, जो बी.ए. के समकक्ष हैं तथा सरकार द्वारा आई. ए. एस., कैट, मैट, जे.आर.एफ. जैसी किसी भी सर्वमान्य प्रतियोगिता परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये मान्यता प्राप्त हैं।

शास्त्री परीक्षा में प्रवेश के पूर्व छात्र को दो वर्ष का राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) का प्राक्शास्त्री परीक्षा का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है, जो हायर सैकेण्ड्री (12वीं) के समकक्ष है। इसप्रकार कुल 5 वर्ष का पाठ्यक्रम है। इसके बाद यदि छात्र चाहें तो दो वर्ष का जैनदर्शनाचार्य का कोर्स भी कर सकते हैं, जो (एम.ए.) के समकक्ष है।

प्राक्शास्त्री में प्रवेश हेतु किसी भी प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सेकेण्डरी (दसवीं) परीक्षा विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान व अंग्रेजी सहित उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

यहाँ डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, बाल ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री एवं पण्डित सोनूजी शास्त्री के सान्निध्य में छात्रों को निरंतर आध्यात्मिक वातावरण प्राप्त होता है।

सभी छात्रों को आवास एवं भोजन की सुविधा नि:शुल्क रहती है।

नया सत्र 20 जून 2011 से प्रारंभ होगा। स्थान अत्यंत सीमित है; अत: प्रवेशार्थी शीघ्र ही निम्नांकित पते से प्रवेशफार्म मंगाकर अपना प्रार्थना-पत्र अंक सूची सहित जयपुर प्रेषित करें।

यदि दसवीं का परीक्षाफल अभी उपलब्ध न हुआ हो तो पूर्व परीक्षा की अंक सूची की सत्य प्रतिलिपि के साथ प्रार्थनापत्र भेज सकते हैं। दसवीं का परीक्षा परिणाम प्राप्त होते ही तुरंत भेज दें।

यदि प्रवेश योग्य समझा गया तो उन्हें **जयपुर (राज.) में 15 मई से 1 जून, 2011 तक** होनेवाले ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर में साक्षात्कार हेतु बुलाया जायेगा, जिसमें उन्हें प्रारंभ से अन्त तक रहना अनिवार्य होगा। **- पण्डित रतनचन्द भारिल्ल**

प्राचार्य, श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय,
ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.) **फोन :**(0141) 2705581, 2707458, फैक्स - 2704127

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 29 (वीर नि. संवत् ह्न 2537) 332 अंक : 8

अपनी सुधि भूल...

अपनी सुधि भूल आप, आप दुख उपायो।
ज्यों शुक नभ चाल विसरि, नलिनी लटकायो।।टेक।।
चेतन अविरुद्ध शुद्ध, दरश-बोधमय विशुद्ध।
तजि जड़ फरसरूप, पुद्गल अपनायो।।
अपनी सुधि भूल...।। 1 ।।
इन्द्रिय सुख-दुख में नित्त, पाग राग-रुख में चित्त।
दायक भव विपति वृन्द, बन्ध को बढायौ।।
अपनी सुधि भूल...।। 2 ।।
चाह दाह दाहै, त्यागौ न ताह चाहै।
समता सुधा न गाहै, जिन निकट जो बतायौ।।
अपनी सुधि भूल...।। 3 ।।
मानुष भव सुकुल पाय, जिनवर शासन लहाय।
'दौल' निजस्वभाव भज, अनादि जो न ध्यायौ।।
अपनी सुधि भूल...।। 4 ।।

– कविवर पण्डित दौलतरामजी

छहढाला प्रवचन

मोक्षमार्ग की आराधना का उपदेश

आतम को हित है सुख, सो सुख आकुलता-बिन कहिए,
आकुलता शिवमाहिं न तातैं, शिवमग लाग्यो चहिए।
सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरन शिव, मग सो द्विविध विचारो,
जो सत्यारथ-रूप सो निश्चय, कारण सो व्यवहारो ।।१।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

जिसकी दृष्टि बंद है, ज्ञानचक्षु नहीं खुले हैं, उसको नय कैसा ? जो केवल व्यवहार को ही देखते हैं, उनको तो राग में एकत्वबुद्धि हो गई है, राग ही उनको सर्वस्व हो गया है; यदि वह राग को ही सर्व स्व न मानता हो तो राग से भिन्न दूसरा स्वरूप कैसा है, उसका उसको लक्ष्य होना चाहिए अर्थात् निश्चय का लक्ष्य होना चाहिए और यदि निश्चय का लक्ष्य हो तो व्यवहार के आश्रय से कल्याण माने नहीं। निश्चय के लक्ष्य बिना मोक्षमार्ग कैसा ? एकान्त व्यवहार का आश्रय तो संसार है - मिथ्यात्व है। बहिर्मुख दृष्टि वाले अज्ञानी को जो शुभ-विकल्प है, वह व्यवहार नहीं है, वह तो व्यवहाराभास है। यहाँ तो मोक्षमार्ग साधने वाले साधक को निश्चय के साथ जो व्यवहार है, उसकी बात है। केवलज्ञान के पहले साधकदशा के व्यवहार को जो नहीं समझता, वह निश्चयाभासी है।

मुनि को आत्मा के रत्नत्रय की शुद्धता कैसी होती है और उस भूमिका में पंचमहाव्रतादि कैसे होते हैं, इन दोनों प्रकार को पहचानना चाहिए; उसमें यदि विपरीतता माने तो मुनि की सच्ची पहचान नहीं होती। उसीप्रकार सम्यग्दर्शन की भूमिका में भी निश्चय और व्यवहार दोनों कैसे होते हैं - यह पहचानना चाहिए। जिस भूमिका में निश्चय-व्यवहार के जैसे प्रकार होते हैं, वैसे यथार्थ पहचानना चाहिए। भाई, यह तो सब तेरे आत्मा के ही भाव हैं, उनको तुम समझो। समझ अर्थात् ज्ञान; ज्ञान अर्थात् आत्मा; केवलज्ञान भी समझ का ही पिंड है; उसमें कहीं राग नहीं है। ज्ञान की जाति अपेक्षा से केवलज्ञान और श्रुतज्ञान दोनों एक ही जाति के हैं।

जैसे रुई की गठरी में सर्वत्र रुई ही भरी है, वैसे ही आत्मा ज्ञान की बड़ी भारी गठरी है। उसमें ज्ञान ही भरा है। अरे, जीव स्वयं ज्ञान ही पिंड होते हुए भी ऐसा कहे कि मेरा स्वरूप मेरी समझ में नहीं आता - यह कैसी बात ? मीठे जल के समुद्र में रहने वाली मछली ऐसा कहे कि मैं प्यासी हूँ, उसके जैसी यह बात है।

भाई ! राग से ममत्व छोड़कर शुद्धात्मा को तुम्हारी दृष्टि में लो तो तुम्हें आत्मशुद्धिरूप सम्यग्दर्शन होगा, उसके साथ ही सम्यग्ज्ञान होगा; सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान होने पर ही स्वरूप में निश्चलतारूप चारित्र होगा - इसप्रकार मोक्षमार्ग होगा; वही सुख है और वही जीव का हित है, उसी को धर्म कहते हैं।

आत्मा ही स्वयं सुखस्वरूप है; अत: आत्मा में उपयोग लगाने से सुख का अनुभव होता है। आत्मा का सुख कहीं बाहर में नहीं है, अत: बाह्य पदार्थ के आश्रय से सुख नहीं होता। सुख जहाँ हो, उसी में उपयोग जोड़ने से सुख होता है अर्थात् निश्चय के आश्रय से सुख होता है और पर के, व्यवहार के, राग के आश्रय से सुख नहीं होता; अत: निश्चय का आश्रय करना चाहिए और व्यवहार का आश्रय छोड़ना चाहिए।

श्रीमद् राजचन्द्रजी (जो कि ववाणीया ग्राम सौराष्ट्र में हुए थे) १७ साल से भी कम उम्र में यह बात बहुत अच्छे शब्दों में लिख गये हैं -

१. स्वद्रव्य और परद्रव्य को भिन्न देखो।
२. स्वद्रव्य के रक्षक शीघ्र बनो।
३. स्वद्रव्य में व्यापक शीघ्र बनो।
४. स्वद्रव्य के धारक शीघ्र बनो।
५. स्वद्रव्य में रमक शीघ्र बनो।
६. स्वद्रव्य के ग्राहक शीघ्र बनो।
७. स्वद्रव्य की रक्षा का लक्ष्य रखो।
८. परद्रव्य की धारकता शीघ्र तजो।
९. परद्रव्य में रमणता शीघ्र तजो।
१०. परद्रव्य की ग्राहकता शीघ्र तजो।

इनमें प्रारंभ के सात बोलों द्वारा स्वद्रव्य का आश्रय करने का मार्ग दिखाया है और पीछे के तीन बोलों द्वारा परद्रव्य का आश्रय छोड़ने को कहा है। इसप्रकार दस बोलों द्वारा जैन सिद्धान्त का सारा रहस्य बतलाया है; थोड़े शब्दों में बड़ी

गम्भीर बात की है।

चैतन्यवस्तु रागादि आस्रव से रहित है और अजीवकर्म से भिन्न है, ऐसी अपनी चैतन्यवस्तु को अनुभव में लेकर जब सम्यग्दर्शन हो, तब निश्चय के साथ के राग में आरोप करके उसे व्यवहार कह सकते हैं; परन्तु जो राग से भिन्न स्वतत्त्व को नहीं जानता और राग में एकत्व मानता है, उसको तो व्यवहार कहाँ रहा ? उसको तो राग ही निश्चय हो गया, अतएव मिथ्यात्व हो गया। पुरुषार्थसिद्धि उपाय में कहते हैं कि अज्ञानी को समझाने के लिए मुनीश्वर अभूतार्थ व्यवहार का भी उपदेश देते हैं; परन्तु जो जीव अकेले व्यवहार को ही परमार्थरूप समझ लेता है, वह सच्चे उपदेश को नहीं समझता; अतएव उसको देशना फलीभूत नहीं होती। भाई ! तुझे परमार्थस्वरूप दिखाने के लिए व्यवहार कहा था, न कि व्यवहार को ही पकड़कर रुकने के लिए।

जैसा सर्वज्ञदेव ने कहा है, वैसे स्वतत्त्व को पहचानकर श्रद्धा में व अनुभव में लेना निश्चयमार्ग है; उसके साथ में होने वाला नवतत्त्व का ज्ञान, सच्चे देव-गुरु की पहचान आदि व्यवहारमार्ग है। अपने सर्वज्ञस्वभाव की श्रद्धा निश्चयसम्यग्दर्शन और अपने से भिन्न सर्वज्ञपरमात्मा की श्रद्धा व्यवहारसम्यग्दर्शन है। धर्मी को ऐसे निश्चय-व्यवहार की संधि होती है। निजस्वरूप में वीतरागी लीनता निश्चयचारित्र है, वह स्वद्रव्याश्रित है और पंच महाव्रतादि शुभराग व्यवहारचारित्र है, वह परद्रव्याश्रित है। स्वद्रव्याश्रित शुद्धता मोक्ष का कारण है और परद्रव्याश्रित रागादि भाव बंध का कारण है।

जैसे अरिहंत भगवान हैं, वैसा मैं हूँ - ऐसा निर्णय करने वाले ने अरिहंत भगवान के विकल्प से दूर जाकर जब अपने ज्ञानस्वभाव की अनुभूति की, तब वास्तविक सम्यग्दर्शन हुआ और उसमें निमित्तरूप अरिहंत की श्रद्धा के भाव को भी सम्यग्दर्शन कहा, सो व्यवहार है अर्थात् वास्तविक सम्यग्दर्शन नहीं है; परन्तु सच्चे सम्यग्दर्शन का उसमें आरोप करके सम्यग्दर्शन कहा है। जो स्वसन्मुख होकर सम्यग्दर्शन प्रगट नहीं करता, उसको न तो निश्चय होता है, न व्यवहार। सम्यक्त्वसन्मुख जीव अरिहंत देव के प्रति लक्ष्य के समय उस विकल्प में अटकना नहीं चाहता था; परन्तु अन्तर में अपने सच्चे स्वरूप का निर्णय करके अंतर्मुख होना चाहता था - ऐसे लक्ष्य के कारण अरिहंत की श्रद्धा को भी सम्यग्दर्शन कह दिया; परन्तु अपने अन्तरस्वभाव की ओर जो नहीं आता, उसको तो ऐसा व्यवहार भी लागू नहीं होता। **(क्रमशः)**

नियमसार प्रवचन ह्न

विभावस्वभावों का स्वरूप

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 41वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है -

णो खइयभावठाणा णो खयउवसमसहावठाणा वा।
ओदइयभावठाणा णो उवसमणे सहावठाणा वा।।41।।

इस जीव के क्षायिक क्षयोपशम और उपशम भाव के।
एवं उदयगत भाव के स्थान भी होते नहीं ।।41।।

जीव को क्षायिकभाव के स्थान नहीं हैं, क्षयोपशमस्वभाव के स्थान नहीं हैं, औदयिकभाव के स्थान नहीं हैं अथवा उपशमस्वभाव के स्थान नहीं हैं।

(गतांक से आगे...)

५. परमपारिणामिकभाव अनादि अनन्त एकरूप शुद्ध है, उसके आश्रय से धर्म होता है।

''सकल कर्मोपाधि से विमुक्त परिणाम से होनेवाला भाव पारिणामिकभाव है।''

यहाँ सकल कर्मोपाधि से विमुक्त का अर्थ 'कर्म से छूटा हुआ' नहीं है; यहाँ तो जिस भाव में कर्मों की अपेक्षा ही नहीं है - उसे विमुक्त कहा है।

जैसा त्रिकाली स्वभाव शुद्ध है, वैसा ही जो परिणमे, उसको पारिणामिकभाव कहते हैं। त्रिकालीद्रव्य शुद्ध, गुण शुद्ध और पर्याय भी शुद्ध - उस सहित जो है, उसे कारणपरमात्मा कहते हैं। स्वभाव गुण-पर्यायों से संयुक्त और त्रिकाल निरावरण निरंजन परमात्मा है; उस परमात्मा के एकरूप रहनेवाले शुद्धभाव को परमपारिणामिक-भाव कहते हैं।

औदयिक आदि चार भाव पर्यायरूप भाव हैं, वे त्रिकाली-स्वभाव के भाव नहीं हैं। परमपारिणामिकभाव इन चार भावों से रहित है। द्रव्य का भाव त्रिकाल एकरूप शुद्धभाव है - उसके बताने का हेतु यह है कि औदयिकादि चारों भाव तो अनित्य हैं, उनके लक्ष्य से रागोत्पत्ति होती है; अतः उन चारों अनित्य भावों का लक्ष्य छुड़ाकर नित्य परमपारिणामिकभाव का लक्ष्य कराया गया है।

वस्तु ध्रुव है, उसमें होनेवाली अवस्था क्षणिक है, अवस्था के लक्ष्य से राग होता है, इसलिये ध्रुवचैतन्यस्वभाव में ये चारों भाव नहीं हैं - ऐसा कहकर शुद्धस्वभाव परमपारिणामिकभाव की श्रद्धा कराई गई है; क्योंकि उसी की श्रद्धा-ज्ञान करने से धर्म होता है।

आत्मा का शुद्धस्वभाव - परमपारिणामिकभाव अनादि-अनन्त एकरूप है, उसके आश्रय से धर्म होता है। औदयिकभाव विकार है, विकार के आश्रय से धर्म नहीं होता। उपशमभाव के समय सत्ता में कर्म पड़ा है, वह भाव निर्मल होने पर भी है तो पर्याय ही और पर्याय के लक्ष्य से राग होता है; धर्म नहीं। अतः द्रव्यदृष्टि कराने के प्रयोजन से ऐसा कहा है कि जीव के चार भाव नहीं हैं; शुद्धजीव तो परमपारिणामिक भावरूप है और उसी के आश्रय से धर्म होता है।

इन पाँच भावों में से औपशमिक भाव के दो भेद हैं, क्षायिक भाव के नौ भेद हैं, क्षायोपशमिक भाव के अठारह भेद हैं, औदयिकभाव के इक्कीस भेद हैं और पारिणामिकभाव के तीन भेद हैं।

औपशमिक भाव - औपशमिक भाव के दो भेद इसप्रकार हैं - अनादि मिथ्यादृष्टि को आत्मा का सच्चा भान हो तब प्रथम उपशमभाव प्रगट होता है; अतः उसे पहले लिया है। उसके दो भेद हैं (१) उपशमसम्यक्त्व (२) उपशमचारित्र।

(१) उपशमसम्यक्त्व - यह जीवद्रव्य की श्रद्धागुण की निर्मल पर्याय है। आत्मा परपदार्थ से जुदा है, विकार से रहित है। ऐसे शुद्धजीव की श्रद्धा-ज्ञान करने पर जीव को प्रथम उपशम सम्यग्दर्शन प्रकट होता है। सत्ता में कर्म पड़ा है अर्थात् कुछ समय के लिए दब गया है; इसलिए उसे उपशम कहते हैं, उसका काल अन्तर्मुहूर्त है। उपशमसम्यक्त्व अपूर्ण निर्मल पर्याय है; अपूर्ण निर्मल पर्याय में से पूर्ण निर्मल पर्याय प्रकट नहीं हो सकती, इसलिए उपशमसम्यक्त्व मोक्ष का कारण नहीं; मोक्ष का कारण तो मात्र एक शुद्धस्वभाव ही है।

(२) उपशमचारित्र - सच्ची श्रद्धा-ज्ञानपूर्वक शुद्धात्मा में अन्तररमणता करना चारित्र है। किन्तु कर्म का मात्र सत्ता में पड़ा रहना उपशमचारित्र है। उसका काल अन्तर्मुहूर्त है, सादिसान्त है, उसके लक्ष्य से मोक्षदशा नहीं होती, पर्याय में से पर्याय प्रकट नहीं होती।

परमपारिणामिकस्वभावभाव अनादि अनन्त है, उसके आश्रय से धर्म होता है। जिसप्रकार सोने में थोड़ा मैल हो तो उस मैल में से सोने का जेवर नहीं बनता; उसी प्रकार औदयिकभाव विकार है, उसमें से अविकारी दशा नहीं होती। जिस तरह सोने के कुण्डल में से अंगूठीरूप नया जेवर नहीं बनता; अपितु कुण्डल का अभाव होकर

ही अंगूठी बनती है अर्थात् सोने में से ही नया जेवर बनता है; उसी तरह उपशमभाव पर्याय है, पर्याय में से मोक्ष की पर्याय प्रकट नहीं होती; उपशमसम्यक्त्व अथवा उपशमचारित्र के रहते हुए मोक्षदशा नहीं होती; किन्तु चैतन्य शुद्धस्वभाव अनादि अनन्त पारिणामिकभावरूप है, वही मोक्ष का कारण है; उपशमचारित्र नहीं।

इसप्रकार उपशमभाव पर्याय है और पर्याय में से पर्याय नहीं होती; अतः उपशमभाव मोक्ष का कारण नहीं है।

क्षायिकभाव पूर्ण निर्मलदशा होने पर भी पर्याय होने के कारण धर्म के लिए आदरणीय नहीं है।

क्षायिकभाव के नौ भेद इसप्रकार हैं -

(१) क्षायिकसम्यक्त्व - आत्मा परपदार्थ से भिन्न है तथा विकार एवं पर्याय जितना भी आत्मा नहीं है। आत्मा परिपूर्ण शुद्ध है - ऐसी प्रतीति होना सम्यक्त्व है। परिपूर्ण शुद्ध सम्यक्त्व प्रकट होना जिसमें निमित्तरूप से दर्शनमोहनीय कर्म का सर्वथा क्षय हुआ हो, वह क्षायिकसम्यक्त्व है। यह चौथे गुणस्थान से होता है और सादि अनन्तकाल रहता है; परन्तु यह भी है तो पर्याय ही। इस क्षायिकसम्यक्त्व की पर्याय के आश्रय से भी केवलज्ञान प्राप्त नहीं होता, वह तो शुद्धस्वभाव के आधार से प्राप्त होता है; अतः क्षायिकसम्यक्त्व भी मोक्ष का कारण नहीं है।

(२) क्षायिक यथाख्यातचारित्र :- आत्मभान के पश्चात् आत्मा की परिपूर्ण लीनता से मोहनीय कर्म के क्षय होने पर प्रगट होनेवाली अवस्था को यथाख्यातचारित्र कहते हैं। यह बारहवें गुणस्थान में प्रगट होता है; किन्तु यह भी एक समय की अवस्था है; इस पर्याय में से मोक्ष की पर्याय प्रगट नहीं होती, मोक्ष का आधार ध्रुव स्वभाव है; यथाख्यातचारित्र मोक्ष का कारण नहीं है। ऐसी वस्तुस्थिति में रोटी न खाना, उपवास करना - यह भला मोक्ष का कारण कैसे होगा ? नहीं होगा।

(३) केवलज्ञान :- यथाख्यातचारित्र होने के बाद आत्मा में केवलज्ञानदशा तेरहवें गुणस्थान में प्रगट होती है, उससे स्व-पर सभी पदार्थों का युगपत् ज्ञान होता है। इसमें ज्ञानावरणी कर्म का क्षय हो जाता है और यह सादि-अनन्तकाल तक रहता है। यह भी एक समय की पर्याय है, केवलज्ञान में से केवलज्ञान की अवस्था प्रगट नहीं होती। केवलज्ञान पर्याय प्रगट होने का कारण ध्रुव स्वभाव है। निचली दशावाले को अभी केवलज्ञान प्रगट नहीं है; अतः उसका विचार करने पर राग उत्पन्न होता है; धर्म नहीं। अतः केवलज्ञान भी स्वयं पर्याय होने के कारण धर्म का कारण नहीं है; धर्म का कारण तो शुद्धस्वभाव ही है। **(क्रमशः)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : क्या भावलिंग भी जीव का स्वरूप नहीं है ?

उत्तर : द्रव्यलिंग तो, सर्वथा ही जीव का स्वरूप नहीं और भावलिंग जो सम्यग्दर्शन-चारित्र की शुद्ध निर्मल पर्याय है और पूर्ण स्वरूप ह्न ऐसे मोक्ष का साधक है, वह भी उपचार से जीव का स्वरूप कहा गया है; परमार्थ सूक्ष्म शुद्धनिश्चयनय से वह भी जीव का स्वरूप नहीं है। साधक पर्याय द्रव्य की है, ऐसा उपचार से कहा गया है। देहादि अथवा रागादि तो जीव के हैं ही नहीं; परन्तु यहाँ तो भावलिंग की पर्याय जो मोक्ष की साधक है, उसे भी जीव की है ह्न ऐसा उपचार से कहा गया है। पर्याय का लक्ष्य छुड़ानेवाली, भेदज्ञान की पराकाष्ठा को छूनेवाली परमात्मप्रकाश की ८८वीं गाथा में यह बात कही है। ध्रुव-स्वभाव के सन्मुख जो ध्यान की अकषाय साधकपर्याय प्रगट होती है, वह भी उपचार से जीव का स्वरूप है, परमार्थ से तो त्रिकाली ध्रुव-स्वभाव ही जीव का स्वरूप है ह्न ऐसी बात तो किसी भाग्यशाली के ही कर्णगोचर होती है।

प्रश्न : एक ओर कहते हैं कि सम्यग्दृष्टि परद्रव्य को भोगते हुए भी बँधता नहीं और दूसरी ओर कहते हैं कि जीव परद्रव्य को भोग नहीं सकता तो दोनों में से सत्य किसे मानें ?

उत्तर : ज्ञानी या अज्ञानी कोई भी जीव परद्रव्य को नहीं भोग सकता; परन्तु अज्ञानी मानता है कि मैं परद्रव्यों को भोग सकता हूँ; अत: यहाँ अज्ञानी की भाषा में अर्थात् व्यवहार से कहते हैं कि परद्रव्यों को भोगते हुए भी ज्ञानी बँधता नहीं है, क्योंकि ज्ञानी को राग में एकत्व बुद्धि नहीं है। अत: परद्रव्य को भोगते हुए भी ज्ञानी को बंध नहीं होता ह्न ऐसा कहते हैं।

ज्ञानी को चेतन द्रव्यों का घात होते हुए भी बंध नहीं होता ह्न इससे ऐसा नहीं समझना चाहिए कि स्वच्छंद होकर परजीव का घात होने में नुकसान नहीं। इसका आशय यह है कि जिसे राग की रुचि छूट गयी है और आत्मा के आनन्द का भान और वेदन वर्तते हुए भी निर्बलता से राग आता है तथा चारित्र-दोष के निमित्त से होनेवाले चेतन के घात से जो अल्प बंध होता है, उसे गौण करके 'ज्ञानी को बन्ध नहीं होता' - ऐसा कहा है; परन्तु जिसे राग की रुचि है और मैं परद्रव्य को मार सकता हूँ, भोग सकता हूँ, ऐसी रुचिपूर्वक भाव में (राग में) एकत्वबुद्धि होने से हिंसाकृत बंध अवश्य होता है।

परसन्मुखता से होनेवाले परिणाम को एकत्वबुद्धि की अपेक्षा अध्यवसान कहकर बंध का कारण कहा है। पर में एकत्व बुद्धि हुए बिना जो राग होता है, उसे भी अध्यवसान कहते हैं; परन्तु उसमें मिथ्यात्व का बंध नहीं होता, अल्पराग का बंध होता है, उसे गौण करके, 'बंध नहीं होता' ह्न ऐसा कहते हैं। स्वभावसन्मुख परिणाम को भी स्वभाव में एकत्वरूप होने से अध्यवसान कहते हैं; परन्तु वह अध्यवसान मोक्ष का ही कारण है।

जो देव-शास्त्र-गुरु और धर्म का स्वरूप समझे, उसे सम्यग्दर्शन होता ही है। ऐसे संस्कार लेकर कदाचित् अन्य भव में चला जाय तो वहाँ भी यह संस्कार फलेगा।

प्रश्न : भेदज्ञान करते समय किसकी मुख्यता करनी चाहिए ? पर या पर्याय, ज्ञेय - किससे भेदज्ञान करना चाहिये ?

उत्तर : यह सब एक ही है। भेदज्ञान का अभ्यास करते समय विचार तो सभी आते हैं; परन्तु जोर अन्दर का आना चाहिये।

प्रश्न : अज्ञानी जिज्ञासु जीव स्वभाव और विभाव के भेदज्ञान करने का प्रयत्न करता है; किन्तु स्वभाव को देखे बिना स्वभाव से विभाव भिन्न कैसे होगा ?

उत्तर : यदि पहले से ही जिज्ञासु जीव ने स्वभाव को देखा हो, तब तो भेदज्ञान कराने का प्रश्न ही नहीं उठता। जिज्ञासु पहले अनुमान से निर्णय करता है कि यह पर की ओर झुकने का भाव विभाव है, उस विभाव में आकुलता है- दु:ख है और अन्तर्लक्ष्यीभाव में शान्ति-सुख है। इसप्रकार वह प्रथम अनुमान से निश्चय करता है।

प्रश्न : धर्म का मर्म क्या है ?

उत्तर : आत्मा अपने स्वभाव-सामर्थ्य से पूर्ण है और पर से अत्यन्त भिन्न है - ऐसी स्व-पर की भिन्नता को जानकर स्वद्रव्य के अनुभव से आत्मा शुद्धता प्राप्त करता है - यह धर्म का मर्म है।

प्रश्न : परलक्ष्यी ज्ञान से तो आत्मा जानने में आता नहीं और अनादि मिथ्यादृष्टि के स्वलक्ष्यी ज्ञान है नहीं तो साधन क्या ? समझाइये।

उत्तर : राग से भिन्न पड़ना साधन है। प्रज्ञाछैनी को साधन कहो अथवा अनुभूति को साधन कहो - यह एक ही साधन है।

प्रश्न : राग और आत्मा की सूक्ष्म सन्धि दिखलाई नहीं पड़ती, अन्य विचार आते रहते हैं तो प्रज्ञाछैनी कैसे पटकें ?

उत्तर : स्वयं विपरीत पुरुषार्थ करता है, इसलिए अन्य विचार आते हैं। पुरुषार्थ करके उपयोग को स्वभावसन्मुख सूक्ष्म करे तो आत्मा और बन्ध की संधि अवश्य दृष्टिगोचर हो और दोनों को भिन्न कर सके।

समाचार दर्शन -

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानंद संपन्न

भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ श्री दि.जैन बाहुबलि मंदिर द्वारा श्री महावीर कीर्तिस्तंभ परिसर में आयोजित श्री आदिनाथ दि. जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव शनिवार, 29 जनवरी से शुक्रवार, 4 फरवरी 2011 तक सानन्द संपन्न हुआ। इस प्रसंग पर श्री बाहुबलि मंदिर में श्री आदिनाथ भगवान व श्री भरत भगवान के 71 इंच की अवगाहना वाले धवल पाषाण के खड्गासन जिनबिम्बों के साथ पूर्व प्रतिष्ठित श्री भगवान बाहुबलि के जिनबिम्ब भी विराजित हुये।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के निर्देशन में सम्पन्न हुये इस महामहोत्सव में उपाध्याय श्री निर्भयसागरजी महाराज के मंगल सानिध्य व प्रवचनों के साथ-साथ तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रासंगिक प्रवचनों को प्रथम बार सुनने वाले समस्त जनसमुदाय द्वारा विशेष तौर पर सराहा गया। इनके अतिरिक्त पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री खनियांधाना एवं पण्डित अनिलजी 'धवल' भोपाल के प्रवचनों का लाभ पर उपस्थित जनसमुदाय को मिला।

पंचकल्याणक की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा विधि प्रतिष्ठाचार्य पण्डित रमेशचंदजी बांझल इन्दौर व सह-प्रतिष्ठाचार्य पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री कोटा ने पण्डित महेन्द्रकुमारजी शास्त्री खनियांधाना, ब्र.रविजी ललितपुर, पण्डित अनिलजी 'धवल' भोपाल, पण्डित मनोजकुमारजी मुजफ्फरनगर एवं श्री टोडरमल महाविद्यालय के छात्रों के सहयोग से शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार सम्पन्न करायी गई। संपूर्ण मंच संचालन एवं निर्देशन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर ने किया।

इस महामहोत्सव की आरंभबेला में अयोध्यानगरी के सिंहद्वार का उद्घाटन श्री मनीषजी पटवारी परिवार दिल्लीवालों ने, ध्वजारोहण श्री सतीशचंद्रजी दिल्ली ने एवं प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्री महेन्द्रकुमारजी रपरिया करहलवालों ने किया। जन्मकल्याणक के पावन अवसर पर प्रथम पालना झूलन का सौभाग्य श्री प्रेमचंदजी बजाज परिवार कोटावालों को मिला। राजा श्रेयांस बनकर आहारदान श्री हृदयमोहनजी रपरिया परिवार भिण्ड ने दिया।

जिनमंदिर के नवनिर्मित शिखर पर कलशारोहण श्री चक्रेशकुमारजी अशोककुमारजी सुशीलकुमारजी बजाज (चक्रेश सुपारी) परिवार कोलकाता ने तथा ध्वजारोहण श्री नरेशचंदजी जैन अहमदाबाद ने किया। नवनिर्मित वेदी पर विराजमान मूलनायक भगवान आदिनाथ पर चांदी का छत्र चढाने का सौभाग्य श्री प्रदीपकुमारजी रपरिया कोलकाता को प्राप्त हुआ।

सम्पूर्ण कार्यक्रमों को प्रासंगिक भक्ति-गीतों व मधुर स्वर लहरियों से श्री सीमंधर संगीत सरिता छिन्दवाड़ा ने मधुरता प्रदान की।

इस अवसर पर लगभग 50 हजार रुपये का सत्साहित्य एवं 1186 घण्टों के सी.डी./डी.वी.डी. घर-घर पहुँचे एवं 1 लाख 15 हजार रुपये की दानराशि संस्था को प्राप्त हुयी।

महोत्सव को सफल बनाने में समिति के पदाधिकारियों के साथ-साथ श्री दि. जैन बाहुबलि युवा/युवती/महिला संगठनों एवं युवा फैडरेशन शाखा का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ श्री चन्द्रप्रभ कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा आयोजित श्री नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन शुक्रवार, दिनाँक 14 जनवरी से बुधवार 19 जनवरी तक अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस प्रसंग पर भव्य जिनालय में आठवें तीर्थङ्कर भगवान चंद्रप्रभ की 51 इंची पद्मासन एवं भगवान ऋषभदेव व महावीरस्वामी की 61 इंची खड्गासन मनोज्ञ प्रतिमा विराजमान की गई।

महोत्सव में प्रतिदिन अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के अतिरिक्त डॉ. उत्तमचंदजी जैन सिवनी, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित वीरेन्द्रकुमार जी आगरा, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित अनिलकुमारजी भिण्ड इत्यादि अनेक विद्वानों के भी प्रवचनों का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला।

पञ्चकल्याणक की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा-विधि प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली ने सह-प्रतिष्ठाचार्य पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित सुनीलकुमारजी शास्त्री 'धवल' भोपाल, पण्डित कांतिकुमारजी जैन इन्दौर, पण्डित नन्हे भैया सागर आदि के सहयोग से शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार सम्पन्न कराई ।

दिनाँक १९ जनवरी को कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई द्वारा निर्मित श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन का उद्घाटन श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई एवं पण्डित अभयकुमारजी देवलाली के कर कमलों से संपन्न हुआ।

इसी दिन रात्रि में डॉ. हुकमचंद भारिल्ल चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा पण्डित जिनेन्द्र शास्त्री उदयपुर का सम्मान किया गया। इस अवसर पर आत्मार्थी कन्या निकेतन की छात्राओं द्वारा सती अनन्तमती नाटिका प्रस्तुत की गई।

बालक नेमिकुमार के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती चौसरबाई श्री कन्हैयालालजी दलावत को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री ताराचंद-निर्मला जैन थे।

महोत्सव के ध्वजारोहणकर्त्ता श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन परिवार जयपुर थे। प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्री मीठालालजी लिखमावत भिण्डर ने किया।

संपूर्ण महोत्सव में पूजन, प्रवचन, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही । इसमें मुम्बई, दिल्ली, दाहोद, अहमदाबाद, सिद्धायतन, सागर, भोपाल, इन्दौर, ध्रुवधाम-बांसवाड़ा सहित संपूर्ण देश से लगभग 5 हजार साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

परीक्षा सामग्री भेजें

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड ए-4, बापूनगर, जयपुर की शीतकालीन परीक्षायें 29 से 31 जनवरी 2011 को संपन्न हो चुकी हैं। संबंधित परीक्षा केन्द्र शीघ्रातिशीघ्र परीक्षा सामग्री भेज देवें।

- ओ.पी.आचार्य (प्रबंधक)

कुन्दकुन्दाचार्य पर गोष्ठी संपन्न

१. जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय में दिनाँक 8 फरवरी को आचार्य कुन्दकुन्द की जयंती मनाई गई। इस अवसर पर प्रात:काल महाविद्यालय के छात्रों द्वारा आचार्य कुन्दकुन्द की पूजन एवं सायंकाल भक्ति का विशेष आयोजन किया गया।

दिनांक 7 फरवरी को 'आचार्य कुन्दकुन्द एवं उनका साहित्य' विषय पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा विशेष व्याख्यान हुआ। इसके अंतर्गत डॉ. भारिल्ल ने कहा कि दिगम्बर जैन अन्वय में भगवान महावीर और गौतम स्वामी के बाद समस्त दिगम्बर मुनिराज परम्परा में कुन्दकुन्दाचार्य का सर्वप्रथम स्मरण किया जाता है।

२. कोटा (राज.) : यहाँ आचार्य धरसेन महाविद्यालय में दिनाँक 8 फरवरी को आचार्य कुन्दकुन्द की जयंती मनाई गई। इस अवसर पर प्रात:काल महाविद्यालय के छात्रों द्वारा आचार्य कुन्दकुन्द की पूजन की गई। सायंकाल मुनिराजों की विशेष रूप से भक्ति की गई। तत्पश्चात् 'आचार्य कुन्दकुन्द एवं उनका साहित्य' विषय पर विशेष गोष्ठी हुई, जिसकी अध्यक्षता श्री बालचंदजी पटवारी ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री ज्ञानचंदजी कोटा एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री कमलचंदजी कोटा व श्री वीरेन्द्रजी हरसौरा उपस्थित थे।

शास्त्री प्रथम वर्ष के छात्रों द्वारा आचार्य कुन्दकुन्द व उनके साहित्य पर शोधपूर्ण वक्तव्य प्रस्तुत किये गये। प्राचार्य धर्मेन्द्रजी शास्त्री एवं अन्य अतिथियों ने भी आचार्य कुन्दकुन्द के संबंध में वक्तव्य प्रस्तुत किये। अन्त में पण्डित रतनजी चौधरी ने आभार प्रदर्शन किया।

विचार गोष्ठी सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन तेरापंथी बड़ा मंदिर (टोडरमलजी का मंदिर) में दिनांक 6 फरवरी को राजस्थान जैन साहित्य परिषद् की ओर से ''आचार्य कुन्दकुन्द : व्यक्तित्व एवं कृतित्व'' विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने अपने मार्मिक व्याख्यान में आचार्य कुन्दकुन्द से जुड़े अनेक पहलुओं का तर्क संगत विवेचन प्रस्तुत किया। साथ ही डॉ. प्रेमचन्दजी रांवका एवं श्री विनयचन्दजी पापड़ीवाल के उद्बोधन का लाभ भी मिला।

इस अवसर पर परिषद् का परिचय श्री नवीनकुमारजी बज ने दिया, अंत में आभार प्रदर्शन श्री महेशजी चांदवाड़ ने किया। गोष्ठी के संयोजक श्री शांतिलालजी गंगवाल थे।

इसी प्रसंग पर जिनमंदिर में 'पण्डित टोडरमल प्रवचन कक्ष' एवं विगत 300 वर्षों में मंदिर से जुड़े विशिष्ट जैन विद्वानों की 'प्रशस्ति पट्टिका' का अनावरण किया गया। गोष्ठी के पूर्व पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के प्रवचन का लाभ मिला। ज्ञातव्य है कि यहाँ आपके द्वारा प्रतिदिन प्रवचन होते हैं।

डॉ. हुकमचंद भारिल्ल चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा पण्डित जिनेन्द्र शास्त्री का ह्न

सम्मान समारोह संपन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ टाउन हॉल में आयोजित नेमिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर दिनाँक 19 जनवरी को डॉ. हुकमचंद भारिल्ल चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर का सम्मान किया गया।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, पण्डित अनिलजी भिण्ड, पण्डित राजकुमारजी बांसवाड़ा, पण्डित महावीरप्रसादजी शास्त्री, डॉ. उदयचंदजी एवं डॉ. पारसमलजी अग्रवाल उपस्थित थे।

श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने डॉ. हुकमचंद चैरिटेबल ट्रस्ट की जानकारी दी।

समारोह में डॉ. ममता जैन बांसवाड़ा ने श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री का परिचय दिया। तत्पश्चात् डॉ. पारसजी अग्रवाल ने तिलक लगाकर, श्री दिनेशजी भट्ट ने माल्यार्पण करके, श्री प्रमोदजी सामर ने शॉल ओढाकर, श्री कन्हैयालालजी दलावत ने मेवाड़ी पाग पहनाकर, श्री विमलचंदजी जैन दिल्ली ने श्रीफल भेंटकर, डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने प्रशस्ति-पत्र भेंटकर व श्री अमृतभाई मेहता फतेहपुर ने 10 हजार रुपये की राशि भेंटकर सम्मान किया। प्रशस्ति का वांचन पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने किया। इस अवसर पर श्री जिनेन्द्र शास्त्री की धर्मपत्नी श्रीमती सीमा जैन का स्वागत भी श्रीमती गुणमाला भारिल्ल द्वारा किया गया।

इस अवसर पर पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री ने डॉ. भारिल्ल का आभार मानते हुए तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में संलग्न रहने का संकल्प दोहराया। कार्यक्रम का संचालन श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने, मंगलाचरण अंकितजी लूणदा ने एवं आभार प्रदर्शन श्री पीयूषजी शास्त्री ने किया।

डाक टिकिट भेजकर नि:शुल्क मंगा लें

कुन्दकुन्दाचार्य द्वारा रचित नियमसार ग्रन्थ पर डॉ. भारिल्ल कृत **नियमसार अनुशीलन भाग-2** (पृष्ठ 258, कीमत 20 रुपये), जिनमंदिरों, वाचनालयों, त्यागियों, ब्रह्मचारियों, विद्वानों, स्वाध्याय प्रेमियों के लिये श्री विनोदजी विजयजी जैन दिल्ली की ओर से उनकी माताजी श्रीमती प्रेमवती जैन ध.प. स्व. श्री लक्ष्मीनिवासजी जैन, मैनपुरी के 101 वें जन्मदिवस पर नि:शुल्क वितरित किया जा रहा है।

ग्रंथ मंगाने हेतु 6/- रुपये के फ्रेश डाक टिकिट अपने पते के साथ लिफाफे में निम्न पते पर भेज देवें। अंतिम तिथि 31 मार्च, 2011 है। **ह्न नि:शुल्क वितरण विभाग,**

श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की ह्व

साहित्यिक व सांस्कृतिक प्रतियोगिताऐं सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल महाविद्यालय के अन्तर्गत प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों द्वारा दिनाँक 21 जनवरी से 1 फरवरी तक विभिन्न आध्यात्मिक एवं खेल-कूद प्रतियोगितायें सम्पन्न कराई गयी।

जिसमें **'धर्म श्रेष्ठ या धन'** विषय पर आयोजित **प्राक्शास्त्री वर्ग की वाद-विवाद प्रतियोगिता** में **पक्ष** से सौरभ जैन (प्राक्शास्त्री प्रथम) प्रथम व सचिन जैन (प्राक्शास्त्री द्वितीय) व हेमचंद जैन (प्राक्शास्त्री प्रथम) द्वितीय तथा **विपक्ष** से नीशू जैन (प्राक्शास्त्री द्वितीय)प्रथम व प्रीतिंकर जैन (प्राक्शास्त्री द्वितीय)द्वितीय स्थान पर रहे। निर्णायक के रूप में श्री मनीषजी शास्त्री एवं श्री तपिशजी शास्त्री उपस्थित थे। संचालन अनेकान्त दिवाकर एवं भावेश जैन ने किया।

प्राक्शास्त्री वर्ग की तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता में सुमित जैन (प्राक्शास्त्री प्रथम) ने प्रथम एवं साकेत जैन (प्राक्शास्त्री द्वितीय) ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। निर्णायक के रूप में श्री सोनूजी शास्त्री एवं श्री अनिलजी खनियांधाना उपस्थित थे। संचालन आशीष जैन मड़ावरा एवं पंकज संघई ने किया।

श्लोकपाठ प्रतियोगिता में राहुल जैन नौगांव (शास्त्री तृतीय वर्ष) प्रथम व साकेत जैन (प्राक्शास्त्री द्वितीय) द्वितीय स्थान पर रहे। निर्णायक के रूप में श्री आलोकजी शास्त्री व श्री अनिलजी शास्त्री सांगानेर उपस्थित थे। प्रतियोगिता का संचालन सूरज मगदुम और संदेश बोरालकर ने किया।

अंत्याक्षरी प्रतियोगिता में साकेत जैन व शुभम जैन (प्राक्शास्त्री द्वितीय) प्रथम तथा रजित जैन व दीपक जैन भिण्ड (शास्त्री तृतीय वर्ष) द्वितीय स्थान पर रहे। निर्णायक श्री सोनूजी शास्त्री एवं कुमारी परिणति पाटील थे। संचालन एकत्व जैन एवं सौरभ जैन ने किया।

'वर्तमान में जैनदर्शन के अध्ययन की उपयोगिता' विषय पर आयोजित **शास्त्री वर्ग की वाद-विवाद प्रतियोगिता** में **पक्ष** से राहुल जैन नौगांव (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने प्रथम तथा कु.प्रतीति पाटील (शास्त्री द्वितीय वर्ष) ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। **विपक्ष** से वीरेन्द्र जैन ने प्रथम एवं विवेक जैन दिल्ली ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की। निर्णायक के रूप में श्री संजीवकुमारजी गोधा एवं श्री पीयूषकुमारजी शास्त्री उपस्थित थे। संचालन आकाश जैन एवं मोहित जैन ने किया।

शास्त्री वर्ग की तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता में राहुल जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष)ने प्रथम, कु.प्रतीति पाटील (शास्त्री द्वितीय वर्ष) ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. पी.सी.जैन ने की तथा निर्णायक के रूप में डॉ. नीतेशजी शाह व श्री आनंदजी शास्त्री सांगानेर उपस्थित थे। संचालन विक्रांत जैन व विकास जैन ने किया।

अंग्रेजी भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान राहुल जैन, कु.प्रतीति पाटील व कु.नयना जैन एवं द्वितीय स्थान पवन जैन ने प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं निर्णायक के रूप में

श्री प्रकाशजी गोलछा उपस्थित थे। संचालन मुक्ति जैन व शनि जैन ने किया।

संस्कृत भाषण प्रतियोगिता में कु.प्रतीति पाटील ने प्रथम व रजित जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री आनंदजी पुरोहित (प्राचार्य-महाराजा कॉलेज) ने की। निर्णायक श्री महेन्द्रजी शर्मा थे। संचालन भावेश जैन व अभिषेक जैन ने किया।

काव्यपाठ प्रतियोगिता में शनि जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने प्रथम व वीरेन्द्र जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री नवलकिशोरजी शर्मा ने की। निर्णायक श्री भागचंदजी शास्त्री एवं सुश्री सीता शर्मा थे। संचालन विवेक जैन व जयेश रोकड़े ने किया।

भजन प्रतियोगिता में एकत्व जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने प्रथम व स्वानुभव जैन (शास्त्री द्वितीय वर्ष) ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री रमेशचंदजी जैन लवाण ने की। निर्णायक श्रीमती समता जैन एवं श्री कुलदीपजी शर्मा थे। संचालन दीपक जैन भिण्ड व सुदीप जैन ने किया।

निबंध प्रतियोगिता में कु. अनुभूति जैन (शास्त्री प्रथम वर्ष) ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

इन प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त क्रिकेट, कबड्डी, खो-खो, बैडमिंटन, कैरम, शतरंज आदि प्रतियोगिताओं का भी आयोजन हुआ।

सभी प्रतियोगिताओं का संयोजन रजित जैन भिण्ड, राहुल जैन नौगांव, वीरेन्द्र जैन बकस्वाहा, भावेश जैन उदयपुर, जयेश जैन उदयपुर एवं समस्त शास्त्री तृतीय वर्ष ने किया।

हार्दिक बधाई

1. लाड़नू (राज.) : जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय लाड़नू द्वारा पहली बार 'संपर्क-2011' का आयोजन किया गया, जिसमें आयोजित हुई प्रतियोगिताओं में श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय सहित अनेक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर 'जैन विद्या की वर्तमान में प्रासंगिकता' विषय पर आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता में श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय के विद्यार्थी वीरेन्द्र जैन बकस्वाहा (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने तृतीय स्थान, 'जैन सामान्यज्ञान प्रतियोगिता' में भावेश जैन उदयपुर (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने तृतीय स्थान, 'जैन विद्या का विकास संभव कैसे' विषय पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता में शनि जैन खनियांधाना (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इनके अतिरिक्त आशीष जैन मड़ावरा, पंकज सिंघई, सूरज मगदुम, संदेश बोरालकर, जयेश रोकड़े एवं सुदीप जैन ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

2. सांभरलेक-जयपुर (राज.) : टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक श्रीकृष्णचंद्रजी जैन (प्रधानाध्यापक राजकीय उच्च प्राथमिक संस्कृत विद्यालय, सांभरलेक) का उत्कृष्ट राजकीय सेवाओं के लिए गणतन्त्र दिवस के अवसर पर सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया साथ ही उन्हें मानपत्र भी प्रदान किया गया।

महाविद्यालय एवं वीतराग-विज्ञान परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

आर्ट ऑफ हैप्पी लिविंग वर्कशॉप संपन्न

लोनावाला-मुम्बई : यहाँ दिनाँक 29 व 30 जनवरी को दो दिवसीय आर्ट ऑफ हैप्पी लिविंग वर्कशॉप का आयोजन किया गया। इस वर्कशॉप में विभिन्न एक्टिविटी के माध्यम से आध्यात्मिक सिद्धान्तों का भाव-भासन करने पर जोर दिया गया।

आज का युवा वर्ग धर्म को मात्र खाने-पीने के संयम और पूजा-पाठ तक ही सीमित समझता है, अन्य लोग भी अध्यात्मिक सिद्धांतों को बुद्धि से समझ तो लेते हैं; पर जीवन का अंग नहीं बनाते। जीवन की हर समस्या का समाधान उनसे नहीं ढूँढते हैं। आर्ट ऑफ हैप्पी लिविंग वर्कशॉप का उद्देश्य यही भावभासन कराना है कि अध्यात्म मात्र आगामी सुख के लिए ही नहीं; बल्कि वर्तमान में हमारे जीवन को शांत और सुखमय बनाने में अत्यंत सक्षम है।

वर्कशॉप के प्रारंभ में सभी को अपनी समस्याओं को एक लिफाफे में लिखने का निर्देश दिया गया। इन दो दिनों में जिस समस्या का निराकरण हुआ, उसे काटकर उस सिद्धांत को लिखना था, जिससे समस्या का निराकरण हुआ है।

वर्कशॉप के अंत तक सभी लोगों की सभी समस्याओं का निराकरण हो गया और सभी ने अपनी समस्याओं के लिफाफे फाड़कर आध्यात्मिक सिद्धांतों के माध्यम से जीवन में सुख-शान्ति लाने का संकल्प किया और अपने-अपने नगरों में भी इस वर्कशॉप को करने की भावना व्यक्त की।

इस अवसर पर श्री अविनाशकुमारजी टडैया द्वारा संकल्प विधि से भूमिका तैयार करने के पश्चात् डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल और विदुषी स्वानुभूति जैन शास्त्री ने आध्यात्मिक सिद्धांतों को सरल और रोचक तरीके से प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का आयोजन श्री अविनाशकुमारजी टडैया के निरीक्षण में श्री आराध्य टडैया शास्त्री ने एवं संचालन श्रीमती स्वानुभूति शास्त्री ने किया।

इस वर्कशॉप को आयोजित करवाने के विषय में विस्तृत जानकारी हेतु संपर्क करें ह्न डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया, 09321295265 E-mail - dpptmumbai@gmail.com
www.facebook.com/DPPT.AHL

– श्रीमती विद्याउत्तम शाह

उज्ज्वल भविष्य की कामना !

अजमेर (राज.) : यहाँ माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान द्वारा आयोजित दीक्षान्त समारोह में दिनाँक 11 फरवरी को टोडरमल महाविद्यालय के छात्र जयेश जैन उदयपुर को वरिष्ठ उपाध्याय (12वीं) में सम्पूर्ण राजस्थान में मेरिट में तृतीय स्थान प्राप्त करने पर शिक्षा मंत्री मास्टर भंवरलालजी मेघवाल द्वारा रजत पदक एवं योग्यता प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

वीतराग-विज्ञान एवं महाविद्यालय परिवार आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

शोक समाचार

१. भोपाल निवासी कविवर पण्डित राजमलजी पवैया का दिनाँक 26 जनवरी 2011 को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत सुप्रसिद्ध कवि थे। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पवैयाजी पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का विशेष प्रभाव रहा। आपने अध्यात्म से ओतप्रोत हजारों आध्यात्मिक भजन, सैंकड़ों पूजायें एवं शताधिक विधानों की रचना करके एक नया कीर्तिमान रचा है। आपके निधन से मुमुक्षु समाज को अपूरणीय क्षति हुई है।

27 जनवरी को आपकी स्मृति में टोडरमल स्मारक भवन में शोक सभा का आयोजन किया गया, जिसमें पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, डॉ. विनोदजी शास्त्री विदिशा एवं पण्डित सोनूजी शास्त्री ने पवैयाजी के संदर्भ में अपने हृदयोद्गार व्यक्त किये।

२. जयपुर निवासी श्रीमती कंचनदेवीजी कासलीवाल का दिनाँक 17 फरवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप सरल स्वभावी एवं गहन शास्त्राभ्यासी महिला थीं। विगत 40 वर्षों से नियमित स्वाध्याय के साथ-साथ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की समस्त गतिविधियों में सक्रियता से भाग लेती थीं। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान को 11000/- रुपये प्राप्त हुये। ज्ञातव्य है कि आप श्री वीरेशजी जैन, सूरत की मातुश्री थी।

३. दिल्ली निवासी श्री गिरीशकुमार जगजीवनदासजी जैन मुम्बई का दिनाँक 21 जनवरी को देवलाली में हार्ट अटैक से 66 वर्ष की आयु में अत्यंत शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप शांताबेन एवं मुकुन्दभाई खारा के भांजे थे।

४. अथाईखेड़ा-अशोकनगर (म.प्र.) निवासी श्री अशोक कुमार जी जैन का दिनाँक 12 जनवरी को अत्यंत शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। वे सरल परिणामी व धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। आपकी स्मृति में संस्था को 250/- रुपये प्राप्त हुये।

५. जयपुर (राज.) निवासी श्री बिरधीचंदजी सेठी का दिनाँक 23 जनवरी को अत्यंत शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप बहुत सरल स्वभावी, शांत, धार्मिक एवं संयमी व्यक्तित्व के धनी थे। टोडरमल स्मारक की गतिविधियों में हमेशा आपका सहयोग रहता था। आपकी स्मृति में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट हेतु 11000/- रुपये प्राप्त हुये।

६. चंदेरी (म.प्र.) निवासी श्री गेंदालालजी सर्राफ का दिनाँक 6 फरवरी को 81 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप प्रतिवर्ष जयपुर शिविर में आते थे। टोडरमल स्मारक द्वारा चलाये जा रहे तत्त्वप्रचार के कार्यों में आपका अपूर्व उत्साह एवं सहयोग रहता था।

७. खैरागढ (म.प्र.) निवासी श्रीमती ढेलाबाई जैन का दिनाँक 10 फरवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 250-250/- रुपये प्राप्त हुये।

८. रतलाम (म.प्र.) निवासी श्री आनन्दीलालजी जैन का दिनाँक 7 फरवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थे। गुरुदेवश्री कानजी स्वामी से आप अत्यंत प्रभावित थे। रतलाम मुमुक्षु मण्डल की स्थापना में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। आपकी स्मृति में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो - यही भावना है।

प्रदेश की श्रेष्ठ पाठशाला !

उदयपुर (राज.) : यहाँ दिनांक 3 जनवरी को युवा फैडरेशन के कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर राजस्थान प्रदेश की श्रेष्ठ पाठशाला का पुरस्कार वी.वि.पाठशाला सेक्टर 11, उदयपुर को दिया गया। महावीर दि.जैन चैरिटेबल ट्रस्ट एवं अरहंत युवा मंच की ओर से चलने वाली इस पाठशाला के निर्देशक पण्डित खेमचंदजी शास्त्री हैं। प्रत्येक रविवार को लगने वाली इस पाठशाला में लगभग 100 विद्यार्थी नियमित उपस्थित रहते हैं। सभी विद्यार्थी व अध्यापक गणवेश में होते हैं एवं सभी विद्यार्थियों का जन्मदिन विशेषरूप से मनाया जाता है।

इस अवसर पर राजस्थान प्रदेश के श्रेष्ठ कार्यकर्ता के रूप में पण्डित संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा को भी सम्मानित किया गया।

मुक्त विद्यापीठ के छात्र ध्यान दें –

उत्तर पुस्तिकाएँ तत्काल भेजें

द्विवर्षीय विशारद कोर्स उपाध्याय परीक्षा एवं त्रिवर्षीय सिद्धांत कोर्स शास्त्री परीक्षा के द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षाएँ दिसम्बर 2010 में संपन्न हो चुकी हैं। जिन परीक्षार्थियों ने अभी तक भी अपनी उत्तर पुस्तिकायें नहीं भेजी हों, कृपया वे तत्काल भिजवा देवें, ताकि रिजल्ट एवं प्रमाण-पत्र जैसे कार्य समय पर पूर्ण हो सकें। – **ओ.पी.आचार्य (प्रबंधक-श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ)**

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

7 मार्च	चन्देरी	प्रवचन
8 व 9 मार्च	घुवारा	वेदी प्रतिष्ठा
13 मार्च	जयपुर (नेवटा)	प्रवचन
15 से 20 मार्च	लोनावाला	प्रतिष्ठा समारोह
16 अप्रैल	दिल्ली	महावीर जयन्ती
10 से 12 मई	मेरठ	वेदी प्रतिष्ठा
15 मई से 1 जून	जयपुर	प्रशिक्षण शिविर
3 जून से 24 जुलाई	विदेश (लंदन-अमेरिका)	धर्मप्रचारार्थ

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें –

वेबसाईट – www.vitragvani.com

संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com